साहित्य अकादेमी

24 अक्तूबर 2009

लेखक से भेंट

यश शर्मा

गीतों का राजकुमार, अलबेला गीतकार या फिर लोकरसी गीतकार, डुग्गर का कलाकार—यश शर्मा को ये उपाधियाँ सरकारी संस्थानों ने नहीं, अपितु जन-साधारण ने प्रदान की हैं। आम आदमी तथा अपनी धरती के प्रति इसी प्यार से उनकी रचनाओं में इंद्रधनुषी फूल खिल उठे जिससे डुग्गर का साहित्य महक उठा।

करुणा, मानवीय संवेदना तथा प्रकृति चित्रण यश शर्मा की रचनाओं की मुख्य विषय वस्तु हैं। प्रभावोत्पादक देशी बिम्ब विधान, अपनी माटी की गंध से अनुप्राणित-पारिवारिक समस्याओं का निरूपण तथा गेयता के गुण की यही विशेषताएँ इन्हें डोगरी काव्य में एक आकर्षक वैशिष्ट्य प्रदान करती हैं। लेखन की जड़ें धरती से जुड़ी होने के कारण उनके जीवनकाल में ही उनकी रचनाएँ लोक मानस की विरासत बन गई हैं।

भाषा की सादगी, शब्दों का सटीक चयन एवं मितव्ययिता भावों का लयात्मक स्वच्छंद प्रवाह-यह काव्य शैली इस कवि की नितांत अपनी है, जिसके कारण डोगरी भाषा के साहित्य में इन्हें एक अग्रणी प्रतिभा माना गया है।

1992 में *जो तेरे मन चित्त लग्गी जा* शीर्षक पुस्तक को साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। साहित्य अकादेमी-डोगरी इकाई के संयोजक कर्नल शिवनाथ जी ने *इंडियन लिट्रेचर* में अंग्रेज़ी में समीक्षा करते हुए लिखा कि, "पिछले चालीस वर्ष से यश शर्मा डोगरी गीत तथा काव्य पाठ करते आ रहे हैं। गीतों की प्रस्तुति का उनका अपना अंदाज़ है, जिसका आज तक कोई अनुकरण नहीं कर पाया है। इसलिए वह सर्वदा कविगोष्ठियों में आकर्षण का मुख्य केंद्र बनते आ रहे हैं।" इस पुस्तक में संकलित शृंगार के और मौसमों, त्यौहारों आदि के कोमल, मुलायम, सुंदर शिल्प वाले गीतों को वे स्वयं तथा अन्य कलाकार ख़ास तौर से उनकी पुत्री सीमा अनिल सहगल गाते रहे हैं, जो आज भी सुनने वालों का मन मोह लेते हैं।

डोगरी भाषा के इस मूर्धन्य कवि का जन्म 9 फ़रवरी 1929 को प्रकृति की नैसर्गिक क्रीड़ा स्थली श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ। बचपन कला नगरी बसोहली में व्यतीत हुआ। वही बसोहली जो कभी अपने पाँच खंडों वाले शीश महलों की भव्यता तथा अनुपम भित्ति चित्रों के कारण उत्तरी भारत के अजूबों में सिरमौर थी।

विश्व प्रसिद्ध बसोहली, चित्रकला, माणकू और नैणसुख रानी मालिनी की अमर स्मृतियों से यश शर्मा सात जन्मों तक मुक्ति नहीं चाहते। यह स्मृतियाँ कवि प्राणों में धड़कन की तरह रची-बसी हैं।

यश शर्मा के दूसरे काव्य संग्रह *बेड़ी पत्तन संझ मलाह* के 'बसोहली वैभव खंड' में यह सभी चरित्र शब्दों की रेखाओं में बंध कर सजीव हो उठे हैं। पुनर्जन्म की धारणा को स्वीकारते हुए राधा कृष्ण की छवियाँ और उनके चितेरों के कहीं दर्शन हो जाएँ इसके लिए कल्पों तक प्रतीक्षारत रहने को प्रस्तुत है कवि आत्मा।

'हुन मैं उत्थैं नईं रौह्न्दा' (अब मैं वहाँ नहीं रहता) नाम की लंबी कविता में उनका आत्म निवेदन कथ्य है। बसोहली से आकर रणवीर हाई स्कूल से मैट्रिक पास करने के पश्चात *प्रिंस* ऑफ़ वेल्ज़

कॉलेज में दाख़िला लिया। यहाँ पर कुछ सहपाठी कवि मित्रों के साथ हिन्दी में लेखन प्रारंभ किया। शीघ्र ही वेदपाल दीप, केहरि सिंह मधुकर और यश शर्मा ये तीनों ही हिन्दी के तीन हस्ताक्षर बनकर उभरे। विभाजन के पश्चात् ये तीनों प्रो. रामनाथ शास्त्री जी के मार्गदर्शन से डोगरी लेखन की ओर मुड़े और डोगरी में तिकड़ी नाम से विख्यात हुए। इनके बग़ैर किसी भी कवि सम्मेलन में निखार नहीं आता था।

वेद राही जी लिखते हैं, ''मुझे अब तक 1951 का बसंतोत्सव याद है। डोगरी संस्था की ओर से डोगरा आर्ट की नुमाइश और डोगरी मुशायरे का भारी एहतमाम था। लेकिन दो दिन पहले ही सबको मुशायरे में एक कमी महसूस होने लगी। अवाम का चहेता गीतकार यश शर्मा उस समय बसोहली में था। तार पर तार दिए जाने लगे। मुशायरे का एलान हो चुका था। ऐन वक़्त पर यश शर्मा पहुँचा और जब उसने अपनी नज़्म 'बंजारा' सस्वर सुनाई तो एक क़यामत बरपा हो गई। एक-एक बंद कई-कई बार सुना गया और पूरी नज़्म की बार-बार फ़रमाईश हुई। अकल पर सहर-ए-हलाल काम कर गया।''

यश शर्मा रेडियो जम्मू तथा रेडियो श्रीनगर में कार्यरत रहे। 1951 में रेडियो कश्मीर के ऐतिहासिक मुशायरे में देश भर से आए महान कवियों के समक्ष सस्वर रचना 'अमन' की प्रस्तुति से ख्याति अर्जित की। चित्र में विश्वव्यापी अमन की आवश्यकता, सर्वत्र जड़ चेतन की सुख समृद्धि की कामना कवि के कोमल अंतर की आईना थी।

मुशायरे में भाग लेनेवालों में श्री गुलाम मोहम्मद, नूर मोहम्मद रोशन, प्रगतिशील कवि दीनानाथ नादिम, उर्दू के महान कवि ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता अली सरदार जाफरी, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कश्मीरी कवि श्री रहमान राही, कवि सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अशरफ़, दानिश्वर कवि जनाब गुलाम रसूल नाजकी, पश्तो भाषा के कवि हरभगवान दास मल्होत्रा, कश्मीरी कवि मास्टर जिंद कौल, हास्य व्यंग्य रचनाकार श्री पुष्कर भान जैसे दिग्गज शामिल थे।

- ग्रेजुएशन के साथ-साथ कश्मीर विश्वविद्यालय से हिन्दी (प्रभाकर) तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से उर्दू (अदीब आलम) की डिग्री।
- 1950 में जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा सद्भावना अभियान में सदस्य (कवि गीतकार) के रूप में अखिल भारत की यात्रा की। इस अभियान का उद्देश्य

बेगुनाह, निहत्थे कश्मीरी आवाम पर क़बाइलियों द्वारा जो जुल्म ढाए गए थे—केसर की क्यारियों तथा फूलों-फलों की धरती कश्मीर में जो मृत्यु की विनाश लीला का तांडव पाकिस्तान द्वारा छद्म रूप से भेजे गए क़बाइलियों ने मचाया था, उसकी पूरी-पूरी जानकारी से देशवासियों को अवगत कराना था। इस दल का उद्देश्य जम्मू कश्मीर, लद्दाख तीनों खित्तों की जनसंख्या, तापमान, जलवायु, पर्वतों, नदियों, पुलों के साथ-साथ रहन-सहन, संस्कृति, भाईचारा तथा रियासत के अन्य सभी पक्षों का सिलसिलेवार ब्यौरा देशवासियों की जानकारी में लाना था। इस मिशन के दल में कविता गीत लिखने का उत्तरदायित्व यश शर्मा का था जैसे 'धूँ-धूँ जलता था कश्मीर हमीं से रूठी थी तक़दीर' जब रियासत के हालात साज़गार हुए तो गीतों का विषय था—

''बहार आ रही है, बहार आ रही है
वह गीतों की गुंजार वादी में गूंजी
वह झीलों में चलने लगे फिर शिकारे
शगूफे खिले और हवा गुनगुनाई
मगर कौन समझेगा इनके इशारे॥''

- बसोहली रामलीला से अभिनय का शौक़ शुरू हुआ। कॉलेज में शहज़ादा मार्क्स के अभिनय से नाट्य क्षेत्र में आए। रेडियो जम्मू तथा श्रीनगर में रेडियो नाटक तथा रंगमंचीय नाटकों का लेखन तथा अभिनय।
- 1957 में फ़र्स्ट कश्मीर फ़ेस्टिवल में नाटक प्रतियोगिता में 'एक क़दम-एक मंज़िल' का लेखन तथा अभिनय। नाटक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

  यह नाटक आम जनता के दु:ख दर्द की कहानी है जिसमें राजसत्ता, ज़मींदारी और पुलिस की दमनकारी चक्की में पिस रही जनता का चित्रण हुआ है।
- 1989-90 में रेडियो नाटकों की अखिल भारतीय प्रतियोगिता में डोगरी नाटक 'न्हेरे दूर करो' पुरस्कृत। पहाड़ों के दूर-दराज इलाक़ों में जहाँ सड़क, बिजली तथा विशेषकर चिकित्सा सुविधा के अभाव में जनता कैसे ओझों, झाड़-फूँक, तंतर-मंतरों के पाखंड में फँसकर दम तोड़ती है। यदि कोई नौजवान डॉक्टर मानवीय संवेदनावश वहाँ पहुँचता भी है तो कैसे वहाँ के ओझे, दुआले, टोने-टोटके यहाँ तक कि डिस्पेंसरी का कंपाउंडर भी मिलकर डॉक्टर के विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं। अँधेरों में फंसी अशिक्षित

यश शर्मा अपनी पत्नी के साथ

यू.आर. अनंतमूर्ति से साहित्य अकादेमी पुरस्कार ग्रहण करते हुए यश शर्मा

जनता तथा उनका रक्त चूसने वाली जोंकों और योग्य डॉक्टर को लेकर इस नाटक का ताना-बाना बुना गया है।

- विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित नाटक 'डॉक्टर' में जम्मू-कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट कल्चर एंड लेंग्वेजिज द्वारा 'कर्नल माधव' के अभिनय में प्रथम पुरस्कार।
- पहली डोगरी फ़िल्म 'गल्लां होइयां बीतियां' तथा टेलीफ़िल्म 'तुकी मेरी सोह' के लिखे गीतों से अपार लोकप्रियता मिली।
- रंगमंचीय नाटक 'राक्षस ते राजे दी बेटी' गोकुल चोर विभिन्न स्थानों पर मंचित। (अप्रकाशित) बैसाखी पर्व पर इसका मावलंकर हाल दिल्ली में रामनगर क्लब द्वारा सफल मंचन। इस नाटक में यश शर्मा ने डुग्गर अंचल की पृष्ठभूमि में समाज के चार अलग-अलग वर्गों द्वारा जिस तरह से नारी के शोषण को बुना व उभारा है, वह अपूर्व है।
- हीखियां, चन्न ते चीड़ां, गिलमू भागू आदि नाटक (अप्रकाशित)।
- जम्मू यूनिवर्सिटी में अंग्रेज़ी विभाग के डॉक्टर प्रजापति प्रसाद के तत्वावधान में पहली बार दो नाटक 'घर मेरा कहानी आपकी' हिन्दी तथा 'चलदी गड्डी' पंजाबी, नाटक मंचित हुए। संभवत: यूनिवर्सिटी में नाटक मंचन का श्रीगणेश यश शर्मा लिखित नाटकों से प्रारंभ हुआ था।
- 'तीन शहज़ादे' नाम का नाटक गांधी मेमोरियल कॉलेज में उसी मंच पर मंचित हुआ, जहाँ कभी यश शर्मा ने शहज़ादा मार्क्स का स्वयं अभिनय किया था। इसकी कथा वस्तु पढ़े-लिखे तीन बेकार नौजवानों के ईद-गिर्द घूमती है। इस नाटक में हास्य और करुण रस का अद्‌भुत मिश्रण है।
- 'आज और कल' नाम का गीति नाट्य (डोगरी) सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर अढ़ाई सौ बार मंचित हुआ। इस गीति नाट्य को संगीतबद्ध किया था, प्रसिद्ध संगीतकार श्री लक्ष्मीकांत जोशी जी ने। इस नाटक की कथावस्तु लेखक के आँखों देखे आश्चर्य और अनुभवों की अभिव्यक्ति है। दूरदराज के पहाड़ी गाँवों क़स्बों की भोली, अशिक्षित, निर्धन जनता, ज़मींदारों, सरकारी अहलकारों तथा स्थानीय साहूकारों के चंगुल में फँस कर शोषित होती थी। पांगी (हिमाचल), पाडर (जेएंडके स्टेट) के निरीह लोगों से नमक, चीनी, चाय के बदले नीलम हड़प लिया जाता था।

  2002 में दूसरे काव्य-संग्रह *बेड़ी पत्तन संझ मलाह* का अभिनव थिएटर में जम्मू कश्मीर कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी जम्मू की ओर से विमोचन किया गया।
- यश शर्मा की महती आकांक्षा विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर की साधना स्थली शांति निकेतन में डोगरी भाषा

की शब्दांजलि अर्पित करने की थी। शांति निकेतन के गीतांजलि सभागार में 18 जनवरी 2006 को अपनी कविता 'मैं मुक्ति नही चाहन्दा' (मैं मुक्ति नहीं चाहता) द्वारा जीवन की यह साध पूर्ण हुई।

- यश शर्मा अपने लेखन की सर्वोत्तम उपलब्धि सुरभि संस्था द्वारा केरल में आयोजित चार दिवसीय 'मानसोत्सव' सम्मेलन में सम्मिलित होना मानते हैं।

  17 सितंबर 1994 को आयोजित इस राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन में (22) भारतीय भाषाओं के लेखकों, बुद्धिजीवियों, मनीषियों ने यश शर्मा द्वारा अपनी डोगरी रचना 'बद्धली' के सस्वर पाठ पर डोगरी भाषा के महत्त्व एवं माधुर्य की उन्मुक्त हृदय से भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

  निरंतर लेखन को अपना धर्म बनाए रखने वाले यश शर्मा ने रेडियो में 32 वर्ष तक कार्य करने के पश्चात् वरिष्ठ उद्घोषक के पद से अवकाश ग्रहण किया। जीवन की इस सांध्य बेला में निरंतर पठन-पाठन के साथ सांध्य गीतों के सृजन के कारण अब 'सांध्य कवि' के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

- यश शर्मा की जीवन यात्रा को कवि पत्नी रक्षा शर्मा ने *सहयात्रा* नाम की पुस्तक में संजोया है।

  डॉ. अरुणा शर्मा के कथनानुसार रक्षा शर्मा का यह एक अनूठा प्रयास है। एक कवि के साथ सही मायनों में उसकी सहयात्री होकर चलना उसका आलोचक होना, कवि की घर-गृहस्थी की ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए यात्रा की मूल्यवान जानकारियों को सहेजकर तोहफ़े के रूप में प्रस्तुत करना एक बड़ा काम है।

  डोगरी के प्रबुद्ध समीक्षक कर्नल शिवनाथ जी के मतानुसार 'सहयात्रा' डोगरी साहित्य के विकास में आरंभ से ही जुड़े हुए यश शर्मा की जीवन यात्रा तथा उनके लेखन के विकास का ब्यौरा मात्र नहीं है, अपितु इसमें डोगरी साहित्य के विकास में योग देनेवाले दूसरे साहित्यकारों की भी जानकारी है।

- यश शर्मा की मूल डोगरी की इक्यावन रचनाएँ दैनिक जागरण जम्मू-कश्मीर के संपादक श्री अभिमन्यु शर्मा द्वारा हिन्दी में अनूदित हैं। मूल डोगरी और उसके हिन्दी अनुवाद की इस पुस्तक का नाम है 'मन वृंदावन'। इन रचनाओं में कवि हृदय की दो भाव धाराएँ निःसृत हैं। राधा-कृष्ण लीला विषयक वैष्णव भाव तथा वैराग्य भाव।

  इन गीतों में डुग्गर के पर्वतीय प्रदेश का मनोहारी वर्णन है। इन प्रदेशों में दब्बड़ जैसे प्राकृतिक रंगमंच हैं। स्थानीय युवक-युवतियों द्वारा प्रस्तुत किए जानेवाले लोक गीत, लोक नृत्य (कुड, नाटी, रासलीला, फुम्मिनयां, शुगला आदि) का शानदार चित्रण हुआ है। यह पर्वतीय संतानें अपने कठिन श्रमिक जीवन के दुःखों को भुलाकर सदियों पुरानी संस्कृति और परंपरा को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। दूसरी भावधारा में मानव मात्र के लिए स्नेह स्वतः उस अनंत की ओर अपना रुख़ मोड़ लेता है। 'मन वृन्दावन' पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है।